उषा यादव के स्वॉग उपन्यास में आधुनिकता बोध

डॉ. मंजूर सैय्यद **,** शितल भावसार

हिंदी अनुसंधान केंद्र बिटको, कॉलेज नाशिकरोड महाराष्ट्र

आधनिकता स्वरुप : भारतीय संस्कृति सुधैव कुटुम्बकम की आदर्श धात्री है । इसमें सिर्फ दो शब्द है केता और विकेता। आज हर चीज बीकाउ है । यहॉ तक की माता पिता, भाईबहन, पिता पुत्र के पवित्र रिश्ते भी बिकाउ हो गए हैं । खुले बाजार और उपभोक्ता संस्कृति ने अर्थ को अत्याधिक महत्त्व दिया है । इसी परीदृष्य का प्रभाव आधुनिक उपन्यासों पर रहा है ।आज वैश्वीकरण के नाम पर चकाचौध भरे आतिशी युग का सम्मोहन चारों ओर फैला है । उसमें बाजारबादी ताकतों की दुरभिसंधि को सहज ही पहचाना जा सकता है । सूचना प्रौद्योगिक और तकनीकी विकास के जबरर्दस्त विस्फोट ने हमारे लिए ज्ञान और नई नई जानकारियों का भंडार तो खोला है, पर इसके खतरे भी अनदेखे नहीं किऐ जा सकते है । अनेक किस्म के साइबर क्राइम, इसका प्रमाण है । फिर यह वैश्वीकरण हमारे भावजगत को सुष्कतर बनाने का षड्यंत्र हैं । हमारा इतिहास बोध विलूप्त करके पॉच हजार साल पूरानी सांस्कृतिक परंपरा से हमें विच्छिन्न करने का दृष्यक्र है । प्रेम, ममता, सौहार्द, सहिष्णुता, क्षमा, और आत्मीयता जैसे जीवन–मूल्यों से हमें काटने की पुरजोर कोशिश हैं । आधुनिकता के लक्षणों में दृष्टिगोचर है।

आधुनिकता : आधुनिक शब्द 'अधुना' में 'इक' प्रत्यय लगाकर निर्मित है । संस्कृत भाषा में "अधुना भव इत्यर्ध अधुना ठत्र सें इसकी व्युत्पत्ति मानी गई है । यह अग्रेंजी के 'मॉर्डन' शब्द का पर्याय है जो मूल लॅटिन शब्द 'Mode' से बना है शब्द कोष मे मॉडर्न का अर्थ है 'Being orexisting at this time Recent Present.'

आधुनिकता कि परिभाषाऍ

1 डॉ गिरिजाकुमार माथूर : आधुनिकता परिवर्तित भाव बोध की वह स्थिती है जिसका प्रादुर्भाव यांन्त्रिक तथा वैज्ञानिक विकास क्रम के वर्तमान बिन्दु पर आकर हुआ है ।

2 हजारी प्रसाद द्विवेदी : आधुनिकता नवीनता काव्य में प्रतिमान रुप को स्पर्श करती है । मांजती है खरोचती है, उसके अन्त निहित स्थिर और विकास समान धर्म की नही स्थिती है ।

3 डॉ हरदेव बाहरी : आधुनिकता का अर्थ नये जमाने का ताजा, नया, नुतन अधकालिक, अर्वाचीन, अपट–डेड, आजकल का आदि शब्दों के अर्थ देता है ।

'बोध' शब्द का अर्थ हुआ किसी धारा, भाव, वस्तु या विषय आदि का ज्ञान या समझा आधुनिकता में विज्ञान, औद्योगिकरण, वर्गचेतना, विकासवाद, आस्तित्ववाद, समाजवाद, मनोविलेषणवाद आदि

पहलू होने से प्रगती का स्थान निश्चीत हो चुका है । इन चितंको के साथ साथ सामाजिक और राजनितिक परिस्थितोयों ने भी आधुनिक चितंन को बहुत प्रभावित किया है । जीवन की बदळती हुई संकल्पनाओं और नवीनता के प्रति उदार दृष्टीकोन आधुनिकतपा का प्रमुख लक्षण है । इस तरह से आधुनिक बोध से सम्पन्न व्यक्ति सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक तथा चिन्तन रुप में आधुनिक विचारधारा को ग्रहन कर उपयुक्त तत्वों का विवेचन विश्लेषन कर उन्हें नवीन मूल्यों में परिवर्तित करते है ।

स्वॉग में उपन्यास में आधुनिकता : कथावस्तू में विश्वविद्यालय की एकांकी महिला प्रोफेसर के यशस्वी जीवन में कालिख पोतने का अटट सिलसिला जब अचानक ही शुरु हो जाता है तो वह अबूश भाव से उसे देखने के सिवाय कुछ नही कर पाती । आखिर कौन और क्यों इस उनकी चरित्रहत्या करने पर तुल हुअ है ? विश्वविद्यालय के तमाम बड़े अधिकारियों के पास उन्हें ईमेल संदेश भेजे जाने का उद्देश्य क्या है? जीवन में अचानक आए इस भूचाल से वह इंतनी कि दुःखी हो जाती है कि, अतंतः खुद को लेकर कुछ कठोर फैसले करने का मन बना लेती है । आई. पी. एस. अधिकारी के रुप में उसी शहर में तैनात उसकी पूर्व छात्रा उससे स्थिति को सँभालने के लिए कुछ समय मॉगती है और फिर जॉच करने पर पता चलता है, कि वह कोई और नही बल्कि जिस पर सबसे ज्यादा विश्वास था वही अकुंश पर आरोप साबित हुआ यह सब उसने मॅडमजी के कोठी के लिए पैसे के खातिर कोठी को गिरवाकर उसके मे विशाल खंड पर मैं आधुनिक सुख–सुविधाओं से युक्त एक आलिशान मॉल बनवाना चाहता था । क्योंकि नौकरी रहते हुए वह भद्र महिला कभी कोबी बेचने पर राजी न होती इसलिए अपनी योजना के पहले चरण में हमने उनकी चरित्र हत्या की साजिश करके नौकरी छोडने के हालत तैयार किए थे । स्वॉग उपन्यास में आज के भौतिकवादी जीवन की तमाम विसंगातियों और भयावह यथार्थ बोध से रु–ब–रु करानेवाला यह उपन्यास आपको पृष्ठ – दर – पृष्ठ उन सच्चाईयों के कोलाज दिखाएगा जिन्हे हम अपने आस – पड़ोस के जीवन की आर्ट गैलरी में आए दिन देखते है । जख्ख और धूसर रंगो के संयोजन से बने इस चित्रों ने स्वॉग एक अलग आकर्षण दे दिया है ।

स्वॉग में समकालीन जीवन की इन्हीं विसंगातियों को उजागर किया गया है । इन्हीं विसंगातियों के द्वारा वैश्वीकरण का चित्रण, अकेली नारी की व्यथा, विश्वास और अविश्वास, स्वार्थवृत्ती संघर्ष जीवन, सिध्दांतवता प्रवृत्ति का दर्शन, युवा पिछी का दष्टिकोन, बृध्दाश्रम योजना, आधुनिक विचार शैली आदि प्रश्नों के माध्यम से उषा यादवने आधुनिकता बोध का दर्शन उपन्यास के माध्यम से किया है ।

निष्कर्ष : उपरोक्त स्वॉग उपन्यास में आधुनिकता बोध से विवेचित है कि, आधुनिकता में परम्परा को नकारने के लक्षण है, और समय के साथ अपने आप को बदलने का संकल्प है। आधुनिकता में

सबसे ताकदवर और महत्वशाली अर्थ संपत्ति, विकास बन गये है। जिसके लिए व्यक्ति अनेक प्रकारकी स्वॉग धारण करते हुए समाज में रहता है और समाज को ठगता है, अंत : में स्वंय ही एक स्वॉग बनकर रहता है। अर्थात आज का व्यक्ति विकास हेतु चेहरे पर चेहरे लगाते हुए जिंदगी जी रहा है। लेकिन असलित सामने आते ही उसे शर्मिदंगी महसूस होती है। और वह फिरसे अपनी पंरम्पराओं की ओर वहन होने लगता है।

संदर्भ ग्रंथ :

उषा यादव – स्वॉग उपन्यास पृष्ठ क्र 120
वही पृष्ठ 9
वही पृष्ठ 21
हिंदी साहित्य में शैली–डॉ, सूर्य प्रकाश मिश्र पृ–207
हिन्दी साहित्य कोश
आधुनिकता और सुजनात्मक साहित्य पृ–166
डॉ विनय लेकिन के बावजूद–पृ–98
दनकर आधुनिक बांध पृ–36